१७. अनुसन्धान १: गठनपूर्णता

दिनांक -10/10/2011 अनुसंधान-1

गठनपूर्णता परमाणु में होता है | अस्तित्व, सह-अस्तित्व रूप में होने के आधार पर गठनपूर्णता घटित हुआ है | सह-अस्तित्व अपने स्वरुप में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति के रूप में है | प्रकृति का तात्पर्य पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था से है | सत्ता का तात्पर्य साम्य ऊर्जा से है | साम्य ऊर्जा का तात्पर्य प्रत्येक इकाई में अर्थात जड़-चैतन्य रुपी प्रकृति में पाए जाने वाले प्रत्येक एक इकाई में, चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म हो, पारगामी के रूप में पहचाना गया है | यह पारगामीयता ही साम्य ऊर्जा में भीगे रहने के कारणहै | भीगे रहने से ही सम्पूर्णजड़-चैतन्य प्रकृति कार्यरत होने, कार्य ऊर्जा निष्पन्न होने का प्रमाण प्रस्तुत है | मानव विचार रूप तक ऊर्जा का सम्प्रेषण कर चुका है | यह विचार विधि से एक से अनेक विचार होना, हर विचार प्रमाणित होना रहना ही इसका प्रमाण सिद्ध है | इसी परेशानी से मुक्ति पाने के अर्थ में विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प विधि से विकसित चेतनपूर्वक मानवत्व प्रमाणित होना होता है | मानवत्व हर मानव का स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार है | अभी तक मानव भाषा के रूप में विचारों को व्यक्त किया है | अभी विकल्प रूप में प्रमाण व्यक्त करने की व्यवस्था है | विचार प्रमाण परम्परा के रूप में होता है | प्रमाण अनुभवमूलक विधि से होता है | भाषा, विचार दूसरे में भाषा, विचार का सृजन करता है | इस प्रकार मानव, विचार परम्परा में जीते हुए वितंडावाद का शिकार हो गया | वितंडावाद का मतलब विरोधाभासी विचार से है |

आदर्शवादी विचार रहस्य में फंस गया है | प्रतीक और उपमा के आधार पर जीता रहा | प्रतीक प्राप्ति होती नहीं, उपमा उपलब्धि होती नहीं | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है | सभी जाँच सकते हैं | विकल्प विधि से विकसित चेतना को अनुभवमूलक विधि से प्रस्तुत करना हम से हुआ | इसमें विरोधाभास होने का सम्भावना शून्यवत हो जाता है | जब कभी भी परम्परा बनेगी, सहअस्तित्व में अनुभव ज्ञान सम्मत ही होगी | दूसरे विधि से विचारों का ध्रुवीकरण होना होता नहीं | अनुभव सम्मत विधि से प्रस्तुत विचारमूलक व्यवहार में ही समाधान प्रस्तुत होता है | समाधान विकसित चेतना का ही स्वरुप है | इस क्रम में मानव सहज विधि से मानवत्व के साथ जीना, परम्परा के रूप में सहज हो जाता है | इस विधि से विकल्प प्रस्तुत है | विकल्प का अध्ययन कुछ विद्वान लोग कर रहे हैं, इनमें से कुछ में प्रमाणित करने का मन बन गया है |

इस विधि से विकल्प का सटीकता का अनुभव होता है | विकल्प में मानव चेतना, देव चेतना,दिव्य चेतना का प्रस्ताव किया है | यह क्रमश: न्याय धर्म सत्य ही है | मानव ही मानवत्व पूर्वक जीकर उक्त चेतनाओं को प्राप्त करता है | इस विधि से हर मानव उपकार करता है | हर मानव उपकार करने के अर्थ में उपकार परम्परा होता है | उपकारी होने पर ही मानव अपराधमुक्त, भ्रममुक्त हो पाता है | पीढ़ी से पीढ़ी समझदारी अर्पित करना ही उपकार है | वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है | दायित्व रूप में समझदारी को स्थापित करना ही है | इस प्रकार समझदारी ही तरण –तारण है | तरण-तारण का मतलब स्वयं समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्वपूर्वक जीते हैं, यही तरने का मतलब है | तारने का मतलब है समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में जीने के लिये अगली पीढ़ी के लिये मार्गदर्शक होना | इस विधि से तरण, तारण का मतलब समझ में आता है।

सह-अस्तित्व अपने में स्वयंस्फूर्त अभिव्यक्ति, प्रभावशीलता है जिसमें मानव का कोई विचार, प्रयास नहीं है | सह-अस्तित्व होने, रहने में स्वयंस्फूर्त है; यही समझ में आता है | सत्तामयता नित्य प्रभावी, नित्य प्रकटनशील, अभिव्यक्त होने के अर्थ में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था स्वयंस्फूर्त विधि से अपने उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित किये है अर्थात तीनोंअवस्थाएं स्वयंस्फूर्त विधि से उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित करती हैं | चौथी अवस्था ज्ञानावस्था का मानव ही है जो अपनी उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित नहीं कर पाया | यह अपराधी एवं भ्रमित रहने के परिणाम स्वरुप है | इसका मूल में भ्रम, शरीर को जीवन मानना है | शरीर भौतिक, रासायनिक रचना की वस्तु के रूप में व्यक्त है जबकि मनुष्य शरीर एवं जीवन का संयुक्त रूप में है | इनमें जीवन नित्य, शरीर का मृत्यु एक घटना है | इस विधि से हमें ज्ञात होता है कि भ्रमित कैसे होते हैं | भ्रमित होना ही अपराध का कारण है |

भ्रम ही मनुष्य को अपराधी बना रखा है | यही सम्मोहन है अथवा प्रलोभन है | प्रलोभन रहने पर स्वाभाविक रूप में भय रहेगा | मानव ज्ञानावस्था का होने के फलस्वरूप भय को नकारता है | जीवों में भी भय को नकारने का संकेत मिलता है | इस प्रकार हम निष्कर्ष में आते हैं कि सहअस्तित्व सहज रूप में प्रस्तुत है, मुख्य रूप से मनुष्य को अपना उपयोगिता, पूरकता को सिद्ध करना है | यह विकल्प विधि से सम्भव है | परम्परा विधि से सम्भव नहीं है | परम्परा विधि का मतलब है आदर्शवाद, भौतिकवाद | आदर्शवाद रहस्यमय होने के कारण प्रमाणित होना सम्भव नहीं है | भौतिकवादी विधि से सुविधा संग्रह का तृप्ति बिंदु मिलता नहीं है; अतः इन दोनों विधियों से व्यवस्था प्रमाणित करना सम्भव नहीं है | इसका सम्पूर्ण भाग में प्रस्तुत है | गठनपूर्णता रूपी चैतन्य प्रकृति का स्पष्टता इस अनुसन्धान का देन है | यह विगत परम्परा में नहीं है | विगत परम्परा अनेक मत, विवाद, संप्रदाय, कल्पना, रहस्य में फस चुका है | इसीलिए यथार्थ की आवश्यकता है | यही विकल्प है | यह आप्त वाक्य है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत